

जौ

जौ की खेती सामान्यतः सभी स्थितियों में की जा सकती है लेकिन विपरीत परिस्थितियों जैसे पिछेती बुवाई एवं बारानी स्थिति, कम उर्वरा भूमि, क्षारीय और लवणीय भूमि में भी जौ उगाया जा सकता है। खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग कर इसकी उपज को काफी सीमा तक बढ़ाया जा सकता है। इस खण्ड के लिये उपयुक्त किस्में निम्न हैं।

ए.ई.एस- I	ए.ई.एस- II	ए.ई.एस- III	ए.ई.एस-IV
			आर.डी.-2052 आर.डी.-2035 आर.डी.-57 आर.डी.-31 आर.डी.-103 बिलाड़ा-2 आर.डी.-2552 आर.डी.- 2715

उन्नत किस्में –

आर डी 2052 (1991) – 120–125 दिन में पकने वाली इस किस्म की ऊंचाई 85–95 सेन्टीमीटर तक होती है एवं पत्तियां नीचे झुकी हुई होती हैं। दाना मध्यम मोटाई का पीले रंग का होता है। पकने पर इस किस्म की बालियां झुकी हुई होती हैं। इसके 1000 दानों का वजन 45–50 ग्राम होता है। मोल्या रोगग्रस्त एवं सामान्य क्षेत्रों के लिये उपयुक्त इस किस्म की उपज 45–65 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर तक ली जा सकती है।

आर डी 2035 (1994) – यह किस्म मध्यम ऊंचाई (75–85 सेन्टीमीटर) 115–125 दिन में पकने एवं अधिक फुटान वाली किस्म है। इसकी बालियां मध्यम लम्बाई की एवं ऑन्स का सिरा हल्का भूरा रंग लिये होता है। दाना मध्यम मोटाई वाला भूरा पीले रंग का होता है। मोल्या रोधक इस किस्म के एक हजार दानों का वजन 40–45 ग्राम

होता है। सामान्य बुवाई वाले सिंचित क्षेत्रों के लिये उपयुक्त इस किस्म की उपज 65–75 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर तक होती है।

आर डी 57 (1978) – इसके पौधे अपेक्षाकृत बौने परन्तु उपज अधिक होती है। यह कम उपजाऊ सिंचित क्षेत्रों के उपयुक्त पाई गई है। इसके पौधे आड़े नहीं गिरते हैं। यह 40 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर तक उपज देती है।

आर डी 103 (1978) – अधिक उपज देने वाली इस बौनी किस्म के पौधे 70–80 सेन्टीमीटर ऊंचे एवं इसका दाना मोटा होता है। कम अथवा अधिक कैसी भी उपजाऊ सिंचित भूमि के लिये उपयुक्त यह किस्म 40–60 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर तक उपज देती है। इसमें मोयले का प्रकोप कम पाया गया है।

बी एल 2 (बिलाड़ा 2) (1980) – लवणीय व क्षारीय क्षेत्रों के लिये उपयुक्त इस किस्म के पौधे मध्यम लम्बे, पत्तियां हल्की हरी झुकी हुई, बालियां सीधी होती हैं। दाने हल्के नीलिमा लिये मोटे होते हैं। यह 100–112 दिन में पक जाती है। कीट एवं व्याधि से साधारणतया प्रभावित होने वाली किस्म है।

आर डी 31 (1978) – 70 – 75 सेन्टीमीटर ऊंचाई के पौधे वाली यह बौनी किस्म 115 दिन में पक जाती है और बारानी खेती के लिये उपयुक्त है। इसकी बाली सीधी, गंदली पीली और छिलके युक्त होती है जिनमें सालू छः कतारों से होते हैं। दाना सुगठित नीली झाँई लिये पीला होता है। सामान्यतः इसकी फसल आड़ी नहीं गिरती है। इसके एक हजार दानों का वजन 40–46 ग्राम होता है। यह 20 – 30 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर तक उपज देती है।

आर डी 2552 (2000) – यह सामान्य अवस्था तथा लवणीय व क्षारीय भूमि में बुवाई के लिए उपयुक्त किस्म है। यह किस्म पीली व भूरी रोली रोगरोधी है तथा 120–127 दिन में पक जाती है। इस किस्म से सामान्य बुवाई वाले क्षेत्रों में 50–60 क्वि. तथा लवणीय व क्षारीय भूमि में 30–37 क्वि. प्रति हैक्टेयर तक उपज ली जा सकती है।

आर डी 2715 (2008) – कृषि अनुसंधान केन्द्र दुर्गापुरा द्वारा विकसित दोहरी उपयोगिता वाली (हरा चारा व दाना) यह किस्म देश की पहली ऐसी किस्म हैं जिसमें हरा चारा अन्य किस्मों से अधिक प्राप्त होता है। यह किस्म सामान्य बुवाई एवं सिंचित क्षेत्रों के लिये उपयुक्त हैं। इस किस्म में बुवाई के 50 से 55 दिन की अवधि पर कटाई करने से औसतन 175–180 क्वि. चारा प्रति हैक्टेयर प्राप्त किया जा सकता है। कटाई के पश्चात सामान्य सिंचाई व हल्के नत्रजन का छिड़काव एवं कृषि क्रियाओं के साथ यह 120–125 दिन में पक जाती है। इसकी औसत उपज 26–28 क्वि. प्रति हैक्टेयर है। यह पीली रोली एवं चेपा रोधक किस्म हैं। इस किस्म के पौधों की उँचाई सामान्यता 85–100 सेमी. होती है एवं 100 दानों का वजन 42–43 ग्राम होता है।

आर डी 2794 (2012) – कृषि अनुसंधान केन्द्र दुर्गापुरा द्वारा विकसित यह किस्म सिंचित क्षेत्रों में सामान्य बुवाई के लिए उपयुक्त है। यह किस्म विशेषतः लवणीय व क्षारीय मृदाओं के लिए अनुमोदित की गई है। छः कतारों के सालु वाली यह किस्म लगभग 121 दिनों में पकती है तथा इसके दानों की उपज 30 क्विंटल प्रति हेक्टर पायी गयी है। इस किस्म के पौधों की ऊँचाई 69 सेमी व 1000 दानों का वजन 38 ग्राम पाया गया है।

खेत की तैयारी एवं भूमि उपचार – खेत अच्छी तरह तैयार करें। आखिरी जुताई के पहले भूमिगत कीड़ों की रोकथाम हेतु प्रति हैक्टेयर 25 किलो क्यूनॉलफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण मिट्टी में मिला दें।

जैविक खाद का प्रयोग – प्रति हैक्टेयर 8 से 10 टन अच्छी सड़ी हुई खाद कम से कम तीन साल में एक बार बुवाई से एक माह पहले अवश्य दें। अगर खरीफ की फसल में इतना खाद दिया जा चुका हो तो रबी में यह खाद देना आवश्यक नहीं है।

बीजोपचार –

1. बीज द्वारा फैलने वाली बीमारियों जैसे आवृत कण्डवा एवं पत्तीधारी रोग से फसल को बचाने हेतु बीज को 2.5 ग्राम

मैन्कोजेब या 3 ग्राम थाइरम प्रति किलो ग्राम बीज की दर से उपचारित करना चाहिये। जहां अनावृत कण्डवा का प्रकोप हो वहां दो ग्राम कार्बेक्सीन प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। कार्बेक्सीन से बीज उपचार करने के बाद अन्य किसी फफूंदनाशी से उपचार की आवश्यकता नहीं होती है।

- यदि सिर्फ दीमक का ही प्रकोप हो तो 400 मिलीलीटर क्लोरपायरीफॉस 20 ई सी को 5 लीटर पानी में घोलकर 100 किलो बीज पर समान रूप से छिड़क कर बीजों को उपचारित करें एवं छाया में सुखाने के बाद बुवाई करें।

क्षेत्रानुसार किस्में, बीज की मात्रा एवं बुवाई

बुवाई की स्थिति सिंचित/असिंचित	किस्म	बुवाई का उचित समय	बीज दर किलो/है.	कतार से कतार दूरी सेन्टीमीटर
हल्की एवं दोमट मिट्टी
सामान्य बुवाई सिंचित	आर डी 57 आर डी 103 आर डी 2035 आर.डी. 2715	मध्य अक्टूबर से नवम्बर तक	100	22.5
भारी मिट्टी				
सामान्य बुवाई सिंचित	आर डी 57 आर डी 103 आर डी 2034	मध्य अक्टू. से नव. तक	100	25
देर से बुवाई सिंचित	आर डी 103	मध्य दिसम्बर तक	125	25
पानी के भराव वाले क्षेत्र	आर डी 31	मध्य अक्टू. से मध्य दिस.	125	30
असिंचित क्षेत्र	आर डी 31	मध्य अक्टू. से नव. प्रथम सप्ताह	125	30
लवणीय क्षेत्र	बी एल 2	मध्य अक्टू. से मध्य नव.	125	25
मोल्या ग्रसित भूमि	आर डी 2035 आर डी 2052	मध्य अक्टू. से नवम्बर तक	125	25

टिप्पणी – ट्रैक्टर द्वारा बुवाई में कतारों की दूरी 22.5 सेन्टीमीटर रखें।

ध्यान रखें – बीज को बिना उपचार किये नहीं बोयें। उर्वरकों का प्रयोग

प्रथम स्तर – प्रभावी स्तर

द्वितीय स्तर – उपयुक्त आर्थिक स्तर – अधिकतम उपज स्तर

मिट्टी की किस्म, बुवाई की स्थिति एवं बीज की किस्म के अनुसार उर्वरकों की मात्रा

बुवाई की स्थिति एवं किस्म	स्तर मात्रा	उर्वरक तत्व किलो प्रति है.		नत्रजन देने का समय व मात्रा किलो प्रति है.	
		नत्रजन	फास्फोरस	बुवाई पूर्व	खड़ी फसल में
सामान्य बुवाई सिंचित.					
आर डी 57	प्रथम	20	---	10	10
	द्वितीय	40	20	20	20
	तृतीय	60	20	30	30
आर डी 103	प्रथम	40	20	20	20
	द्वितीय	60	20	30	30
	तृतीय	80	40	40	40
आर डी 2035 / 2052		80	40	40	40
पानी के भराव वाले क्षेत्र (असिंचित व लवणीय क्षेत्र)					
आर डी 31	प्रथम	20	---	20	
आर डी बी 1	द्वितीय	25	15	25	
बी एल 2 (बिलाड़ा 2)	तृतीय	30	15	30	

उर्वरक प्रयोग में सावधानी

1. जहां मिट्टी की जांच की गई वहां मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला द्वारा दी गई सिफारिशों के अनुसार ही उर्वरक प्रयोग करें।
2. फास्फोरस एवं पोटैश धारी उर्वरकों की पूरी मात्रा तथा नत्रजनीय उर्वरक की बुवाई के समय दी जाने वाली आधी मात्रा को ओरने से ऊर कर दें। शेष आधी नत्रजन की मात्रा खड़ी फसल में पहली तथा दूसरी सिंचाई के बाद दें। नत्रजनीय उर्वरकों की मात्रा कतारों में छिटक कर देना चाहिये।
3. असिंचित क्षेत्रों में सभी उर्वरकों की पूरी मात्रा बुवाई के समय ही दें।

सिंचाई – जौ को सामान्यतः हल्की एवं दोमट मिट्टी में 4 से 5 सिंचाइयों की और भारी मिट्टी में 2 से 3 सिंचाइयों की आवश्यकता पड़ती है। बुवाई के 25 से 30 दिन बाद पहली सिंचाई दें। इसके बाद आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहना चाहिये। फूल आने एवं दाने की दूधिया अवस्था में पानी की कमी नहीं रहनी चाहिये अन्यथा इसका कुप्रभाव पैदावार पर बहुत अधिक पड़ता है।

निराई गुड़ाई एवं खरपतवार नियंत्रण – प्रथम सिंचाई के 10 से 12 दिन के अन्दर कम से कम एक बार निराई गुड़ाई कर खरपतवार अवश्य निकाल दें व बाद में भी आवश्यकतानुसार खरपतवार निकालते रहें। चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों को नष्ट करने हेतु दोनों किस्मों में बुवाई के 30–35 दिन व अन्य किस्मों में 40–50 दिन के बीच प्रति हैक्टेयर आधा किलो 2–4 डी एस्टर साल्ट या 750 ग्राम 2–4 डी अमाइन साल्ट या मेटाक्स्यूरोन 250 ग्राम (सक्रिय तत्व) नीदानाशी रसायन को पानी में घोलकर छिड़कें। उर्वरक निराई गुड़ाई के बाद दें।

गुल्ली डण्डा (फेलेरिस माइनर) व जंगली खरपतवार का प्रकोप जिन खेतों में गत वर्षों में अधिक रहा हो उन खेतों में बुवाई के 30 से 35 दिन बाद आइसोप्रोट्यूरान अथवा मेटाक्स्यूरॉन अथवा मेथोबन्जाथायोजूरॉन नीदानाशी, हल्की मिट्टी हेतु पौन किलो तथा भारी मिट्टी हेतु सवा किलो सक्रिय तत्व को पानी में घोलकर एक सार छिड़काव करें। यह ध्यान रहे कि छिड़काव समान रूप से हो, कहीं भी दोहरा छिड़काव नहीं करना चाहिए। मेटाक्स्यूरॉन का छिड़काव करने से घास कुल व चौड़ी पत्ती वाले सभी खरपतवार नष्ट हो जाते हैं। जिन खेतों में गत वर्षों में इन खरपतवारों का मामूली प्रकोप रहा हो, उन खेतों में जब खरपतवार बड़े हो जायें तब इन खरपतवारों को बीज बनने से पहले खेत से निकाल दें।

पौध संरक्षण

- **पलीबीटल और फील्ड क्रिकेट्स** – कीटग्रस्त खेतों में प्रति हैक्टेयर 25 किलो मिथाइल पैराथियोन 2 प्रतिशत चूर्ण को सुबह या शाम के समय भुरकें।
- **मकड़ी, मोयला व तेला** – पहली बार मकड़ी का प्रकोप दिखाई देने पर मिथाइल डिमेटोन 25 ई सी या डायमिथोएट 30 ई सी एक लीटर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें। इस छिड़काव से मोयला व तेला कीट की रोकथाम भी हो जाएगी। यदि आवश्यकता हो तो 15 दिन बाद इस छिड़काव को दोहरायें।
- **दीमक** – यदि आवश्यक हो तो खड़ी फसल में दीमक नियंत्रण हेतु क्लोरोपायरीफॉस 20 ई सी चार लीटर प्रति हैक्टेयर सिंचाई के साथ दें।

- **रोली रोग** – रोली के लक्षण दिखाई देते ही 25 किलो गन्धक चूर्ण का प्रति हैक्टेयर की दर से सुबह या शाम के समय भुरकाव करें। यह भुरकाव 15 दिन के अन्तर से 2 से 3 बार करें। ज्यादा प्रकोप होने पर ट्राईडेर्मोफ 750 मिलीलीटर प्रति हैक्टेयर छिड़कें।
- **मोल्या रोग** – इस रोग से ग्रस्त पौधे छोटे रहकर पीले पड़ जाते हैं और जड़ों में गांठें बन जाती हैं। रोग की रोकथाम हेतु एक या दो साल तक गेहूं या जौ की फसल नहीं बोयें। इसके स्थान पर जौ की मोल्या रोगरोधी आर डी 2035 या आर डी 2052 किस्म बोयें या फसल चक्र में चना, सरसों, प्याज, सूरजमुखी, मैथी, आलू या गाजर की फसल बोयें। इसके अतिरिक्त रोग की रोकथाम हेतु मई जून की कड़ी गर्मी में एक पखवाड़े के अन्तर से खेतों की दो बार गहरी जुताई करें। जिन खेतों में रोग का प्रकोप हो वहां खेतों की बुवाई से पहले 30 किलो कार्बोफ्यूरॉन 3 प्रतिशत कण प्रति हैक्टेयर की दर से भूमि में ऊर कर बुवाई करें।
- **अनावृत कण्डवा रोग एवं पत्ती कण्डवा रोग** –रोग दिखाई देते ही रोगग्रस्त पौधों को उखाड़ कर नष्ट कर दें ताकि रोग का और फैलाव न हो। बचाव हेतु बीजोपचार अवश्य करें।
- **चूहों की रोकथाम** – फसल के अंकुरित होते समय एवं पकते समय चूहे विशेष रूप से नुकसान करते हैं। अतः इस समय इनकी रोकथाम हेतु एक भाग जिंक फॉस्फाइड को 47 भाग आटे और दो भाग तिल या मूंगफली के तेल में मिलाकर विषैला चुग्गा तैयार करें और प्रत्येक आबाद बिल के पास लगभग 6 ग्राम या आवश्यक हो तो अधिक चुग्गा रखें। दूसरे

दिन मरे हुए चूहों को उठाकर जमीन में गाड़ दें। दवा मिला विषैला चुग्गा डालने से पहले दो तीन दिन तक शाम के समय विषहीन चुग्गा बिलों के पास डालकर चूहों को बिना झिझक चुग्गा खाने की आदत डालें। चूहा नियंत्रण अभियान सामूहिक रूप से अपनायें।

विशेष :-

1. जौ की फसल की हरा चारा के लिये भी बुवाई की जा सकती है। हरे चारे के लिए जौ की बुवाई अक्टूबर मध्य में करनी चाहिए। इस हेतु 125—130 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर बीज दर काम में लें। इसकी पहली कटाई बुवाई के 75 दिन बाद तथा दूसरी कटाई उसके 45 दिन बाद करें।
2. जौ—सरसों, की मिश्रित/खेती से हरे चारे की गुणवत्ता तथा उत्पादन में बढ़ोतरी होती है।

फव्वारा, ड्रिप व पाइप लाइन

इस्तेमाल करें।

पानी की बचत होगी व

सिंचित क्षेत्र बढ़ेगा।